National Journal of Research and Innovative Practices (NJRIP)
Vol-5, Issue-11, 2020; ISSN No. : 2456-1355; Web: www.edusanchar.com

''शिक्षक शिक्षा के विकास में बी.एड. पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता''

मार्गदर्शिका
डॉ0 सावित्री सिंगवाल

शोधकर्त्री
लक्ष्मी कुमारी

समाज और राष्ट्र की प्रगति का प्रतिबिम्ब होती है। यह समाज, राष्ट्र व विश्व की शक्ति है जो एकता, सुख और समृद्धि के आधार के रूप में राष्ट्र को गौरवान्वित करती है। शिक्षक शिक्षा का मुख्य ध्येय अध्यापक का सर्वांगीण विकास करना होता है इसे प्राप्त करने के लिए अध्यापक के मानसिक स्तर, बौद्धिक क्षमता पाठ्यक्रम, रूचि, आवश्यकता व योग्यता को आधार बनाया जाता है। यह कार्य उचित पाठ्यक्रम का निर्माण करके किया जा सकता है।

वर्तमान परिपेक्ष में विश्व शान्ति की स्थापना के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रस्तुत है। विद्यालयी शिक्षा बालक का आध्यात्मिक, शारीरिक, बौद्धिक, सांवेगिक, चारित्रिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक विकास करती है या यों कहे कि यह बालक का सर्वांगीण विकास करती है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। ऐसे में शिक्षको का दायित्व और बढ जाता है। अतः शिक्षक शिक्षा को प्रभावी एवं गुणवत्ता पूर्ण बनाना हमारे शिक्षाविदो एवं चिन्तको की अहम जिम्मेदारी बन जाती है। शिक्षक शिक्षा छात्राध्यापको को प्रशिक्षणकाल में प्रदान किये गये समस्त सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक ज्ञान का सामूहिक पुंज है जो शिक्षा की क्यारियों में खिलने वाले फूलो को पल्लवित करती है।

अध्यापक शिक्षा का मुख्य ध्येय अध्यापक का सर्वांगिण विकास करना होता है तथा उसे प्राप्त करने के लिए अध्यापक के मानसिक, स्तर, पाठ्यक्रम, रूचि, आवश्यकता व योग्यता को आधार बनाया जाता है। शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति का साधन पाठ्यचर्या है।

भारतीय प्रजातंत्र में अपेक्षित शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि पाठ्यचर्या को विद्यार्थियों की रूचि एवं योग्यता के अनुरूप हो। जैसा कि विदित है सत्र 2015 से पूर्व हमारे देश में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि एक वर्षीय थी। जिसे सत्र 2015–16 से बढाकर दो वर्ष किया गया। हमारे शिक्षाविदो ने महसूस किया कि राष्ट्र निर्माताओं एवं कर्णधारो को शिक्षित करने वाले अध्यापको को भी श्रेष्टतम विधा से तैयार किया गया हो, क्योंकि किसी भी इमारत की मजबूती के लिए नीव को मजबूत होना जितना आवश्यक है उतना ही आवश्यक है कारीगर को हुनर का ज्ञान होना। शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक ही वह कारीगर है जो बालको को तराशता है और आकर प्रदान करता है। एक ही कक्षा में पढ़ाये गये विभिन्न विद्यार्थियों में एक बालक डॉक्टर बनता है, एक इन्जीनियर, एक चित्रकार, एक संगीतज्ञ, एक खिलाड़ी और उन्ही बालको में से तैयार होता है एक अध्यापक। अतः अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए गहन चिन्तन आवश्यक है। समाज की विभिन्न आवश्यकताओं को जानते हुए समस्याओं का समाधान खोजना, बालको को सीखने के लिए तैयार करना, कक्षा–कक्ष प्रबंधन को प्रभावी बनाना, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को नई विधाओं से जोड़ना, शिक्षण में नवीन कौशल एवं तकनीकी का प्रयोग एवं मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावी बनाना हमारी अध्यापक शिक्षा व्यवस्था का परम लक्ष्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

❖ प्राथमिक स्त्रोत – कोटा विश्वविद्यालय कोटा का द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम

❖ पुस्तकें :–

- अस्थाना विपिन (1994) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, (उत्तर प्रदेश)।
- भटनागर आर.पी. बी.मीनाक्षी (1998) एज्येकेशन, रिजर्व इन्टरनेशनल पब्लिकेशर्स मेरठ।
- भटनागर आर.पी. (2003) शिक्षा अनुसंधान इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ 25001.
- चौबे, सरयु प्रसाद (1995) तुलनात्मक शिक्षा. आगराः विनोद प्रस्तक मंदिर।
- ढौढ़ियाल, एस., फाटक, ए. (2003). शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र जयपुर राजस्थान हिन्दी अकादमी।
- श्रीवास्तव, डी.एन. (2001) अनुसंधान विधियाँ. आगरा : साहित्य प्रकाशन।
- सुखिया ए.पी. (1971) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व पी.वी. विनोद प्रस्तक मंदिर, आगरा।
- व्यास हरिशचन्द, कैलाशचन्द (1996) शैक्षिक प्रबंधन व शिक्षा की समस्याऐं आर्य बुक डिप्पो करोल बाग नई दिल्ली।

❖ SURVEY REPORT:

- Buch, M.B. (1988-1992): Fifth Survey of Research in Education. New Delhi : Vol.-I , NCERT.
- Buch, M.B. (1988-1992): Sixth Survey of Research in Education. New Delhi : Vol.-I , NCERT.
- National Education Policy 2019

❖ EDUCATION - JOURNALS

- तिवारी, सचिदानन्द ''वर्तमान पाठ्यक्रम और विद्यार्थीः नई शिक्षा, राष्ट्रीय शैक्षिक पत्रिका, अंक–3, जयपुर।
- Best, J.W. (1950), Elements of educational Research, New Delhi : Prentice Hall P.31
- Best, J.W. (1963). Research in education, New Delhi : Prentice Hall P.32